शोध-प्रारूप

नागपुरी महाकाव्य अविनासी घासी के कथ्य एवं शिल्प : एक अध्ययन

पीएच०डी० शोध-प्रारूप

स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग

संकाय - जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष - 2024

पीएच०डी० उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध-प्रारूप की रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. रामजय नाईक
सहायक प्राध्यापक (नागपुरी)
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
जगन्नाथनगर महाविद्यालय, धुर्वा
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

अनुप गाड़ी
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

<u>नागपुरी महाकाव्य अविनासी घासी के कथ्य एवं शिल्पः एक अध्ययन</u>

प्रस्तावना:-

‘नागपुरी’ झारखण्ड राज्य की एक प्रमुख भाषा है। यह राज्य के दक्षिणी भाग की सम्पर्क भाषा है। झारखण्ड के अतिरिक्त उड़िसा, छत्तीसगढ़, बंगाल के सीमावर्ती क्षेत्रों पर इसका विस्तार है। असम के चाय बगान और अंडमान निकोबार के कुछ क्षेत्रों में भी यह भाषा बोली जाती है। नागवंशी राजाओं के राज्य-काल में इसे यहाँ का राज्यभाषा होने का गौरव प्राप्त था। साथ ही यह झारखण्ड राज्य की दूसरी मान्यता प्राप्त राज्यभाषा भी है। नये झारखण्ड राज्य के रूप में उदय के साथ ही यहाँ भाषिक परिदृश्य और भी महत्वपूर्ण हो गया है। अतः आवश्यक है, कि नागपुरी सहित्य का नये सिरे से मूल्याकंन हो, जिससे राष्ट्रीय क्षितिज में इसकी पहचान बन सके ।

अब तक प्राप्त जानकारी एवं शोध के अनुसार नागवंशी राजा रघुनाथ नृपति को नागपुरी काव्य परम्परा का प्रथम शिष्ट कवि होने का गौरव प्राप्त है। इनका राज्य काल 1647 से 1707 ई तक था। इनकी प्राप्त रचनाओं के भाषा का स्वरुप एवं काव्य-कौशल को देखते ही सहज पता लग जाता है, कि उनके काल तक नागपुरी गीत परम्परा ने अपनी ऊचाई छू ली थी। ऐसे में यह निश्चय होता है, कि उनके पूर्व भी इस काव्य-परम्परा का समृद्ध तथा विकासमान स्वरुप अवश्य ही रहा होगा।

कवि रघुनाथ नृपति के बाद हनुमान सिंह, बरजूराम पाठक, दलेल सिंह, विनोद सिंह, नारायण सिंह, जयगोविन्द मिश्र, सोबरन साय, कंचन, अनुप राय, महंत घासी, घासीराम, दृग्पाल राम देवघरिया, सोबरन सिंह, धनी राम बक्शी जैसे अनेक सक्षम कवियों ने अपनी काव्य प्रतिभा से नागपुरी काव्य साहित्य का श्रृंगार किया। आधुनिक काल में कवि शारदा प्रसाद शर्मा, पौराणिक गौरीनंदन शर्मा, शिव अवतार चैधरी, मृत्युजंयनाथ शर्मा, सहनी उपेन्द्रपाल ‘नहन‘, नईम उद्दीन मिरदाहा, लाल रणविजय नाथ शाहदेव, प्रफुल्ल कुमार राय, डॉ. विसेश्वर प्रसाद केशरी, द्वारिका नाथ सिन्हा, धनेन्द्र प्रवाही, प्रमोद कुमार राय, और कृष्ण कलाधर जैसे अनेकों समर्थ कवियों ने पूरी

रचनाधर्मिता के साथ नागपुरी काव्य संसार के विकास एवं वृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

नागपुरी के अख्यान (पाला) गीतां के रूप में प्रबंध काव्यों की एक प्रारंभिक परंपरा रही है। लेकिन तकनीकी तौर पर पाला गीतों को पूरी तरह प्रबंध काव्य नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार नागपुरी के पुछारी गीतों में भी एक सीमित प्रबन्धात्मकता के दर्शन होते हैं। आगे चलकर इसी परम्परा का विकास प्रबंध काव्य के रूप में हुआ और अनेक खण्ड-काव्यों की रचना सुगम हुई। इसके अन्तर्गत दृग्पाल राम देवघरिया रचित 'नल दमयंती', घासीराम रचित 'नागवंशावली झूमर', बलदेव साहु रचित 'लव कुश चरित', शारदा प्रसाद शर्मा रचित 'भगवान एक पूरब कर' और 'विपल्ली महान', सहनी उपेन्द्रपाल रचित 'मेवाड़ केशरी', मृत्युजय नाथ शर्मा रचित 'रामायणी सीतायन' तथा कृष्ण कलाधर रचित 'इसु चरित', विशेष उल्लेखनीय हैं। अविनासी घासी महाकाव्य इसी परम्परा की एक सशक्त कड़ी है।

<u>अविनासी घासी महाकाव्य का परिचय:-</u>

इस महाकाव्य का प्रकाशन सन 2011 ई० में हुआ हैं। जिसमें उन्नीसवीं-बीसवीं सदी (सन 1859 ई०-1937 ई०) के ख्यातिप्राप्त नागपुरी कवि घासीराम को महाकाव्य का नायक बनाया गया है। नागपुरी भाषा-भाषी क्षेत्र में कवि घासीराम अत्यन्त लोकप्रिय कवि रहे हैं। उनके गीत आज भी यहाँ के गाँवों में लोकगीत की तरह गाये जाते हैं। उन्हें मसमानों के जमींदार लाल गोकुलनाथ शाहदेव और छोटानागपुर महाराज प्रताप उदयनाथ शाहदेव से भी संरक्षण और सम्मान प्राप्त हुआ था। उनकी प्रसिद्ध रचना 'नागपुरी फाग शतक' सन 1911 ई० में मुम्बई के वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस से छपकर प्रकाशित हुई थी। इसके बाद भी इनकी रचनाओं के कई संकलन तथा ललना रंजन, 'नागपुरी दुर्गा सप्तशती' आदि प्रकाशित हुए।

इन्हीं से कवि घासीराम के जीवन को केन्द्र बनाकर कवि कृष्ण कलाधर ने 'अविनासी घासी नामक इस नागपुरी महाकाव्य की

रचना की। यह महाकाव्य 267 पृष्ठों में तथा 14 कांडो में विभक्त है और महाकाव्य की शास्त्रीय कसौटी पर खरा उतरता है। इसकी कथावस्तु, मूल कथा के साथ-साथ तात्कालीन बिरसा आंन्दोलन, टाना आंन्दोलन, नागवंश का इतिहास और अंग्रेजी राज की कहानी भी कहती है। महाकाव्य में झारखण्ड के मूल निवासी 'सदान' समाज की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पक्ष का भी सुन्दर चित्रण हुआ है। काव्य की दृष्टि से भी यह एक महत्वपूर्ण रचना है। इसमें नागपुरी के परम्परागत रागों के साथ-साथ बंगला और हिन्दी के विविध छंदों का सुन्दर प्रयोग किया गया है। ठेठ नागपुरी शब्दों के साथ-साथ नागपुरी कहावतों, मुहावरो, अलंकार एवं बिम्ब का सुन्दर प्रयोग मंत्रमुग्ध कर देने वाला है। काव्य रूप में, इसमें सभी प्रकार के रसों का प्रयोग हुआ है। नागपुरी के विख्यात विद्धान डॉ. बी०पी० केशरी ने इस महाकाव्य को इन्ही विशेषताओं से युक्त देखकर इसके विविध पक्षों पर अनेक शोध की आवश्यकता पर बल दिया है।

<u>शोध की प्रेरणाः-</u>

नागपुरी भाषा के प्रति मेरा झुकाव शुरू से ही रहा है क्योंकि मेरा जन्म राँची के एक छोटे से गाँव में हुआ है। जहाँ पर सादरी या नागपुरी भाषा का प्रयोग अधिकतर किया जाता है। जिससे नागपुरी भाषा के प्रति मेरा लगाव शुरू से ही रहा है। लेकिन उस वक्त मेरी उतनी समझदारी नहीं थी। जब मैं पुस्तकालय, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं कुछ सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने के क्रम में विद्वानों की बातों को सुनकर, मेरे मन में नागपुरी भाषा के प्रति जागृति आयी। जगन्नाथनगर महाविद्यालय, धुर्वा, स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग में अध्ययन के दौरान विभागाध्यक्ष डॉ. हरीश कुमार चैरसिया, सहायक प्राध्यापक डॉ. रामजय नाईक, डॉ. अंजु कुमारी साहु, प्रो० अरुण अमित तिग्गा, डॉ. पार्वती मुण्डू एवं अन्य सभी शिक्षकों से साहित्य, संस्कृति पंरपरा इत्यादि की जानकारी प्राप्त हुई ।

लोकजीवन एवं आमजीवन के रूपांकन की जानकारी का सूक्ष्म अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ तो मैं इस विषय पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित हुआ। इसमें साथ ही जब हमें जे०एन० महाविद्यालय के द्वारा सिसई में स्थित नवरत्न गढ़ शैक्षणिक भ्रमण के दौरान डॉ. कृष्ण कलाधर से मिलने का सौभाग्य और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ तथा जब मैं उनकें द्वारा रचित 'महाकाव्य अविनासी घासी' का अध्ययन किया तो मैं इससे बहुत प्रभावित हुआ। इसी विचारधारा ने मुझे 'नागपुरी महाकाव्य अविनासी घासी के कथ्य और शिल्प' विषय पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। इस दृष्टिकोण के अनुसार साहित्य, सामाजिक संरचना के विभिन्न पक्षों, संबधों, प्रवृतियों, संघर्षो यानी समाज की पूरी संरचना में ही सहभागिता है।

अतः साहित्य को आगे बढ़ाने एवं सुदृढ़ करने के लिए अध्ययन के इन्हीं व्यापक बिन्दुओं पर साहित्यक कृतियों को देखना भी जरुरी है।

<u>प्रस्ताविक शोध कार्य का उद्देश्य एवं प्रासंगिकताः-</u>

महाकाव्य किसी भी भाषा और साहित्य के विकास में मील का पत्थर होता हैं। यह इस बात का सूचक होता है कि इस नागपुरी भाषा के साहित्य का विकास एक अपेक्षित स्तर तक हो चुका है या हो रहा है। अविनासी घासी महाकाव्य के कथ्य एवं शिल्प भी इस तथ्य को सूचित करते हैं, कि नागपुरी भाषा निरन्तर विकास कर रहा है। महाकाव्य की रचना किसी जाति के इतिहास का एक महत्वपूर्ण पड़ाव होता है। समाज और संस्कृति के बिना महाकाव्य का फलक पूर्ण नहीं हो सकता। अविनासी घासी महाकाव्य के काव्य में भी झारखण्डी समाज विशेष रूप से सदान जाति के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, धर्म, रीति-रिवाज एवं जीवन दर्शन का सुन्दर समावेश हुआ है। महाकाव्य के कथ्य के माध्यम से घासीराम के जीवन के साथ-साथ यहाँ के इतिहास, भूगोल, दर्शन, समाज और संस्कृति को कलात्मक ढंग से दर्शाया गया है। महाकाव्य की इन्हीं विशेषताओं से अभिभूत होकर नागपुरी भाषा के

समीक्षक डॉ. हरीश कु० चैरसिया ने इस महाकाव्य को- 'सदान जाति का लघु विश्वकोश कहा है।'

अतः इस शोध कार्य का उद्देश्यः-

1. झारखण्ड के सदान जाति के जीवन के विभिन्न अनछुए पहलुओं को उजागर करना भी है।
2. अविनासी घासी महाकाव्य के शिल्पगत अध्ययन से नागपुरी भाषा साहित्य के विकास को रेखांकित करने में मदद मिलेगी।
3. नागपुरी भाषा के वर्तमान स्वरुप और दिशा की जानकारी भी प्राप्त होगी।
4. यह अध्ययन नागपुरी भाषा के सौंदय और उसकी सार्मथ्य की परख करने का भी माध्यम होगा।
5. भारतीय साहित्य की पृष्ठभूमि में नागपुरी स्वयं को कहाँ रख पा रही है यह जानना भी दिलचस्प होगा।
6. इस शोध कार्य में तत्कालीन और वर्तमान युग चेतना के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की भी पहचान होगी, जो महाकाव्य के कलेवर में प्रस्तुत हो चुका है।
7. इस शोध के अध्ययन से बड़ी मात्रा में सामग्री इकट्ठा करना एंव उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति करना।
8. नागपुरी साहित्य में अनुसंधान के द्वारा साहित्य के प्रति अभिरुचि का विकाश करना एवं सहित्य को विकास की ओर ले जाना।
9. नागपुरी साहित्य को अनुसंधान द्वारा संपन्न एवं समृद्ध बनाना।

नागपुरी भाषा विभाग के अन्तगर्त किसी भी नागपुरी महाकाव्य के कथ्य एवं शिल्प पर संभवतः यह पहला शोध-कार्य होगा। इससे भी इसकी आवश्यकता एवं प्रांसगिकता सिद्ध होती है।

शोध विधि:-

किसी भी शोध कार्य की विधि सुव्यवस्थित ढंग होती हैं। यह वास्तविक तथ्यों पर आधारित व निश्चित निष्क्रष पर होता है। शोधकार्य का आधार विश्वासनीय तथ्यों, सूचनाओं, आंकड़ो आदि को एकत्र करने एवं उसे प्रस्तुत करने की विधि होती है।

प्रस्तुत शोध कार्य से संबधित तथ्यों के संकलन के लिए विस्तृत सूची बनाई जाएगी। इसमें 'महाकाव्य अविनासी घासी' के विभिन्न पहलुओं से संबधित प्रश्न रखे जाएंगे। इसके लिए विद्‌वानों, बुद्‌धिजीवियों, भाषाविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, निर्देशकों आदि का व्यक्तिगत संपर्क एवं साक्षात्कार स्थल निरीक्षण किया जाएगा। प्रश्नों सें संबधित तथ्यों का संकलन करके समीक्षा की जाएगी। उपलब्ध दस्तावेजों जैसे- प्रकाशित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन किया जाएगा। वैश्वीकरण के दौर में आधुनिक तकनीक मीडिया, अखबारों, फोटोग्राफी, फोटोकॉपी एवं इंटरनेट आदि का सहारा लिया जाएगा। शोध विषय से संबधित विभिन्न पुस्तकालय में अध्ययन एवं शोध संस्थान का भी सहारा लिया जाएगा। साथ ही साथ विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक पद्‌धति का भी सहयोग लिया जाएगा। साथ ही आवश्यकता अनुसार विभिन्न विधियों को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसे इस प्रकार से देखा जा सकता है-

1. साक्षात्कार विधि
2. प्रश्नावली विधि
3. अवलोकन विधि
4. तुलनात्मक विधि
5. विश्लेष्णात्मक विधि

शोध उपकरण:-

1. ऑडियो रिकार्डर
2. कैमरा
3. लैपटॉप
4. इंटरनेट
5. अखबार
6. पुस्तकालय
7. पत्र-पत्रिकाएं
8. संर्दभ ग्रंथों का अध्ययन
9. विभिन्न पुस्तक-पुस्तिकाएं
10. अन्य उपकरणों का उपयोग

पूर्व अध्ययन और अनुसंधान:-

कवि घासीराम पर नागपुरी तथा हिन्दी के विद्धानों ने अनेक आलेख प्रकाशित किए हैं, जिनमें 1. पंडित योगेन्द्रनाथ तिवारी, 2. श्री शंभु नारायण लाल, 3. डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी, 4. विद्यापति तथा डॉ. बी०पी० केशरी के नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं। ये आलेख नागपुरी काव्य परम्परा में घासीराम के महत्वपूर्ण स्थान को रेखांकित करते हैं। इसी क्रम में 5. डॉ. गोविन्द साहु ने 'धासीरामः व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर डॉ. बी०पी० केशरी के निर्देशन में शोध करके राँची विश्वविद्यालय ,राँची से पीएच० डी० की उपाधि प्राप्त किये हैं। अवनासी घासी के रचनाकार श्री कृष्ण कलाधर पर भी जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची में 6. दो लघु शोध छात्रों के द्वारा प्रस्तुत किये जा चुके हैं। इसके साथ ही अविनासी घासी पुस्तक के भूमिका भाग में इस महाकाव्य के विभिन्न पक्षो (कला पक्ष एवं भाव पक्ष) को लेकर 7. डॉ. बी०पी० केशरी, 8. सहनी उपेन्द्रपाल नहन, 9. प्रो० हरीश कुमार चैरसिया, तथा 10. अशोक पागल, के आलेख हैं इसके अलावा 'अविनासी घासी' महाकाव्य में प्रकृति चित्रण, र्शीषक से श्री धनेन्द्र प्रवाही जी का एक आलेख 'डहर' पत्रिका में प्रकाशित हो चुका हैं।

यथा संभव इस प्रकार की प्रत्येक सामग्री का उपयोग इस शोध कार्य में किया जायगा ।

<u>पाद टिप्पणीः</u>-

1. कविवर घासीराम और उनका काव्य; आदिवासी पत्रिका,राँची 17 अगस्त 1961
2. घासीराम के गीतों में वर्षा वर्णन, आदिवासी पत्रिका, राँची, 17 अगस्त 1961
3. घासीराम एक परिचय, आदिवासी पत्रिका, राँची, 15 अगस्त 1964
4. छोटानागपुर संदेश साप्ताहिक, राँची,1975
5. विद्यापति और घासीराम, छोटानागपुर संदेश साप्ताहिक, राँची, 4 मई 1976
6. (क) राजेन्द्र कुमार साहु, डॉ. कृष्ण प्रसाद साहु; व्यक्तित्व एवं कृतित्व (लघु शोध प्रबन्ध, एम०ए० 16 वॉ पत्र, सत्र 2004-2006)
   (ख) कुमारी सरिता कुसुम, नागपुरी निबंध संग्रह-फुलसुन्दरी एक परिचय (लघु शोध प्रबंध, एम० ए० 8 वॉ पत्र, सत्र 2007-2008)
7. बहुत-बहुत बधाई; अविनासी घासी- भूमिका भाग
8. अविनासी घासी पढ़ल बाद मोर मन कर उदगार; अविनासी घासी- भूमिका भाग
9. मोर नजइर में अविनासी घासी; अविनासी घासी- भूमिका भाग
10. सारस्वत चिन्तन की अविच्छिन परम्परा; अविनासी घासी- भूमिका भाग

शोध प्रारूप

(शोध की रूप रेखा)

नागपुरी महाकाव्य अविनासी घासी के कथ्य और शिल्प: एक अध्ययन

1. प्रस्तावना
2. प्रस्तुत अध्ययन की प्रेरणा
3. प्रस्तुत शोध-कार्य की मौलिकता एवं उद्देश्य
4. प्रस्तुत शोध-कार्य की प्रस्तुति
5. शोध विधि

प्रथम अध्यायः नागपुरी महाकाव्य परम्परा में 'अविनासी घासी'

1. महाकाव्य का परिचय
2. नागपुरी महाकाव्य परम्परा का विस्तार
3. नागवंशावली झूमर, सीतायन तथा अविनासी घासी की तुलना
4. महाकाव्य की कसौटी में अविनासी घासी

द्वितीय अध्यायः अविनासी घासी; सामान्य परिचय

1. अविनासी घासी के रचनाकार (कवि) का संक्षिप्त परिचय
2. अविनासी घासी की कथावस्तु
3. अविनासी घासी की कथावस्तु के स्त्रोत
4. अविनासी घासी के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

तृतीय अध्यायः अविनासी घासी के तात्कालिक परिस्थितियों से जुड़े कथ्य

1. (क) कथ्य क्या है ?
   (ख) कथ्य एवं समानधर्मी संज्ञाएँ
1. परिस्थितिजन्य संबंधी कथ्य -
   सामाजिक, संस्कृतिक एवं राजनीतिक कथ्य

चतुर्थ अध्यायः अविनासी घासी के वैचारिक कथ्य

1. आन्तरिक कथ्य
   (क) रीझ-रंग
   (ख) प्रेम
   (ग) जिजीविषा

(घ) अन्त्तद्वंद

(ड) आस्था

(च) सौंदर्य बोध

2. बाह्‌य कथ्य

(क) मानवतावादी दृष्टिकोण

(ख) परिवेश के प्रति जागरुकता

(ग) नारी चरित्र-चित्रण के विविध रुप

(घ) ग्रामीण समस्याएँ

(ड़) झारखण्डी (सदानी) संस्कृति की कथ्य प्रस्तुति

(च) नागपुरी भाषा-साहित्य की प्रतिष्ठा

पंचम अध्यायः अविनासी घासी का शिल्प-विधान

1. (क) शिल्प का अर्थ एवं परिभाषा

(ख) कथ्य एवं शिल्प

2. अविनासी घासी में अलंकार, बिम्ब एवं प्रतीक योजना

3. अविनासी घासी में छंद योजना

4. अविनासी घासी में रस योजना

(क) अविनासी घासी में अंगी रस

(ख) अविनासी घासी में अन्य रसों की स्थिति

5. अविनासी घासी में प्रकृति चित्रण- आलंबन, उद्दीपन, मानवीकरण पृष्ठभूमि

6. अविनासी घासी के काव्य-गुण

षष्ट अध्यायः अविनासी घासी की भाषा-शैली

1. नागपुरी कवियों की काव्य-भाषा

2. नागपुरी काव्य भाषा के विकास में कवि कृष्ण 'कलाधर' का योगदान

3. अविनासी घासी की भाषा

(क) तत्सम, तद्भव, एवं विदेशज शब्दों का प्रयोग

(ख) नागपुरी के क्रियापद एवं विशेषण आदि

(ग) कहावते, मुहावरे एवं सूक्तियाँ

(घ) अविनासी घासी की शैलीगत विशेषताएँ- गद्यात्मकता, नंटकीयता, विडम्बनाबोध, व्यंगात्मकता, विसंगति, रोमांटिक कला, आदि

उपसंहार/निष्कर्ष

1. परिशिष्ट
   - (क) सहायक ग्रंथ सूची
   - (ख) साक्षात्कार विवरणी
   - (ग) सामग्री स्त्रोत
2. पत्र-पत्रिकाओं की सूची

नोटः शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार आंशिक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

<u>**शोध निर्देशक**</u>

डॉ. रामजय नाईक
सहायक प्राध्यापक (नागपुरी)
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
जगन्नाथनगर महाविद्यालय, धुर्वा
राँची विश्वविद्यालय, राँची

<u>**शोधार्थी**</u>

अनुप गाड़ी
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

<u>**संदर्भ ग्रंथ सूची**</u>:-

क्र.सं.	लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	प्रकाशन वर्ष
1.	केशरी, डॉ. बी०पी०	साहित्य के तत्व एवं आयाम, चतुर्थ संस्करण	झारखण्ड झारोखा	2013
2.	केशरी, डॉ. बी०पी०	नागपुरी भाषा: उद्गम और विकास	नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची	2006
3.	केशरी, डॉ. बी०पी०	नागपुरी भाषा और साहित्य, द्वि० संस्करण	छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ, राँची	2005
4.	कलाधर, कृष्ण	अविनासी घासी	नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची	2011
5.	कलाधर, कृष्ण	लोपाई छंद	नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची	2011
6.	गोस्वामी, डॉ. श्रवण कुमार	नागपुरी शिष्ट साहित्य	बिहार राजभाषा परिषद,पटना-4	1976
7.	गोस्वामी, डॉ. श्रवण कुमार	नागपुरी और उसके वृहत श्रय	कमल प्रकाशन, राँची	1971
8.	गोहिल, मनीश	उपेन्द्रपाल ‘अश्क’ के अन्यास- कथ्य और शिल्प	पल्लव प्रकाशन, नई दिल्ली-110091	2007
9.	गुप्त, डॉ. आशा	मैथिलीशरण गुप्त का काव्यः सांकृतिक अध्ययन	अन्नापूर्णा प्रकाशन, कानपुर	1979

10.	चतुर्वेदी, डॉ. राजेश्वर प्रसाद	रस, दोष, छंद, अलंकार निरुप	सीतापुर रोड, लखनऊ-226020	
11.	प्रसाद, डॉ. राम	स्वातंत्र्योत्तर नागपुरी साहित्य: एक शास्त्रीय अध्ययन	समय प्रकाशन, दिल्ली-110092	2003
12.	मिश्रा, रेखा	कालीदास के गीतों का कथ्य एवं शिल्प	अवरो पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अवरो, बुंदेलखंड वि०वि०, झाँसी	1995
13.	राय, गुलाब	काव्य के रूप	आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	1991
14.	व्यास, वर्षा रानी	अमरकांत का साहित्य: कथ्य एवं शिल्प	कोटा वि०वि०, कोटा (राजस्थान)	2014
15.	शर्मा, देवेन्द्रनाथ	काव्य के तत्व	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	2011
16.	साहु, डॉ. त्रिवेणी नाथ	नागपुरी काव्य में प्रकृति-चित्रण	किशोर, विद्या निकेतन, वाराणसी	2008

<u>पत्र-पत्रिकाएँ</u>:-

1. असरा
2. जय झारखण्ड
3. नागपुरी कला संगम पत्रिका
4. डहर
5. आदिवासी
6. पझरा
7. जोहार सहिया
8. छोटानागपुर संदेश
9. दैनिक भास्कर समाचार पत्र
10. जागरण समाचार पत्र
11. प्रभात खबर
12. हिंदुस्तान ।